ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-05-01-2021 ***खतरे की घंटी***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

खतरे की घंटी

मनुष्य की सब कुछ हड़पने की लिप्सा के कारण सिकंदर के विश्व-विजय के अभियान से लेकर पंद्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक संसार में छोटे-बड़े अनेक युद्ध हुए। उन युद्धों में अनगिनत लोग मारे गये। कई संपन्न नगरों का वैभव उजड़ा और कई नगरों का नामोनिशान तक मिट गया, अनेक राज्य बने और मिटे। इतना विनाश होने पर भी मनुष्य की अक्षय भूख न मिटी , प्रत्युत दिनों-दिन और भी भड़कती गयीं और इसका कारण था पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप में जागरण की एक लहर, जिसे पश्चिमी इतिहासकारों ने 'रेनेसॉ" का नाम दिया है। यूरोप में जागरण की लहर का सूत्रपात किया, एक जर्मन पादरी ने जिसका नाम था-मार्टिन लूथर। मार्टिन लूथर ने धार्मिक पाखंडों और सड़ी-गली रूढ़ियों का जमकर विरोध किया। जागरण की यह लहर धीरे-धीरे सारे यूरोप में फैल गयी। इससे लोगों में लीक से
~~~~~~~~~~

हटकर सोचने की एक विशेष तर्क-शक्ति जागृत हुई। वे हर बात में कार्य-कारण संबंधों की खोज करने लगे। अपनी इसी चेतना के बल पर उन्होंने नाना प्रकार के प्राकृतिक सिद्धांत ढूँढ़कर निकाले, जिनके बल पर उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण आविष्कार किये। ये वैज्ञानिक युग का प्रारंभ था। इन आविष्कारों में सबसे उपयोगी आविष्कार था-भाप की शक्ति का। भाप की शक्ति से इंजन चला। इंजन से रेलगाड़ियाँ, स्टीमर, रोडरोलर, फ्लोर मिल के अनेक कल-कारखाने चालू हो गये। इसे श्रम और समय की बचत हुई और धड़ाधड़ उत्पादन हुआ। धड़ाधड़ उत्पादन से यूरोप का बाज़ार माल से पट गया।

इस प्रकार यूरोप में यांत्रिक चेतना उत्पन्न हुई।इस यांत्रिक चेतना ने औद्योगिक क्रांति को जन्म दिया। जैसे-जैसे विज्ञान-ज्ञान आगे बढ़ता गया; औद्योगिक क्रांति भी परवान चढ़ती चली गयी। वर्तमान युग को औद्योगिक युग कहना गलत न होगा। आज उद्योग-धंधे ही किसी राष्ट्र की संपन्नता की कुंजी बनते जा रहे हैं।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, तरह-तरह के उद्योग-धंधों से तैयार माल से यूरोप की मंडियाँ पट गयीं। इसकी खपत के लिए यूरोप का बाज़ार कम पड़ने लगा। फलतः यूरोप से बाहर बाज़ार की खोज के लिए नए-नए देशों की खोज का सिलसिला चालू हुआ।कुतुबनुमा के आविष्कार ने इस काम को और सरल बना दिया।

यूरोपीय व्यापारियों द्वारा नए देशों की खोज का प्रमुख लक्ष्य था-भारत। भारत का रेशम, गरम मसाले, मोती-मूंगा आदि रत्न और महीन सूत के थान यूरोप की विभिन्न मंडियों में स्थान पा चुके थे। भारत की काली मिर्च के लिए तो सारा यूरोप पागल या परंतु स्थल मार्ग से होने वाला व्यापार जोखिम से भरा था। अतः यूरोपीय नाविकों में समुद्री मार्ग से भारत तक पहुँचने का मार्ग खोजने की होड़ लग थीं फलस्वरूप सन् 1487 में डियाज़ नामक एक पुर्तगाली नाविक ने अफ्रीका

के पश्चिमी तट के साथ-साथ दक्षिण की ओर चलकर इस विशाल भू-भाग के दक्षिणी छोर का पता लगाया। सन् 1492 में, कोलंबस ने भारत की खोज के सिलसिले में अन्य अपरिचित विशाल भू-भाग का पता लगाया, जिसे 'अमरीका' नाम दिया गया। सन् 1498 में, एक पुर्तगाल नाविक वास्को-डि-गामा ने भारत के पश्चिमी तट पर अपना बेड़ा उतारा। अब सारी दुनिया यूरोपीय नाविकों की मुट्ठी में थी। यूरोप के ये दुस्साहसी नाविक संसार के समुद्रों पर छा गये।

क्रमशः

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'